* उपसंहार *

उ प सं हा र

डॉ. भारतीजी हिन्दी के बहुमुखी साहित्यकार है । उनका प्रारंभिक जीवन यातनाओं से भरा हुआ है । स्कूली शिक्षा लेते समय उनके पिता की मृत्यु होती है । जिससे परिवार की जीम्मेदारी उनके कंधोपर आती है । वे परिवार का बोस सम्भलकर परिश्रम के साथ अपनी शिक्षा पुरी करते है । वे वैवाहिक जीवन में भी असफलत रहें है उनकी पहली पत्नी कांता भारतीने एक बच्चा होते ही, उनका साथ छोड दिया । जिससे भारतीजी को दूसरा विवाह पूष्पा शर्मा के साथ करना पड़ा । इन परिस्थितियों संघर्ष उनके व्यक्तित्व ने किया । इस व्यक्तित्व को बनाने में उनके माता-पिता के आदर्श और उन के संस्कार तथा उनके मामाजी अभयकृष्ण जौहरी का आर्थिक सहयोग महत्वपूर्ण है । उन्होंने जीवन को जिस रुप में देखा, जाना, पहचाना है, उसीतरह उसे अपने उपन्यासों के द्वारा अभिव्यक्त किया है । अतः उनके व्यक्तित्व में संघर्षशीलता, अध्ययनशीलता एवं चिंतनशीलता दिखायी देती है । उनका कृतित्व भी अद्वितीय बन गया है । वे एक सफल, कहानीकार, नाटककार, कवि, उपन्यासकार निबन्धकार, पत्रकार एवं स-हृदय आलोचक है । केवल दो ही उपन्यास लिखकर वे उपन्यास क्षेत्र में माहिर बन चुके है । उनका पहला उपन्यास है "गुनाहों का देवता" और दूसरा "सूरज का सातवाँ घोडा" ।

धर्मवीर भारती के उपन्यास "प्रेम" पर आधारित है, लेकिन दोनों उपन्यासों की प्रेम धाराएँ अलग--अलग है । "गुनाहों का देवता" में प्रेम के हल्के-फुल्के चित्रों कों इन्द्रधनुष के रंगो से सँजाया है । यहाँ प्रेम का आदर्शरुप प्रस्तुत किया है । तो "सूरज का सातवाँ घोडा" में स्वप्निल प्रेम कहानी को त्याग कर यथार्थ प्रेम पर प्रकाश डाला है ।

"गुनाहों का देवता" की कथावस्तु चन्दर और सुधा के प्रेम से जुडी हुयी है । इसकी मुख्य कथा है- चन्दर और सुधा के आदर्श प्रणय भाव की । प्रारंभ में चन्दर और सुधा हँसते-खेलते, लडते-झगडते हुऐ दोनों एक मन हो जाते है । परंतु सुधा की शादी कैलाश से होती है । जिससे कथानक नया मोड़ लेता है । सुधा के विवाह के पश्चात चन्दर और सुधा टूट जाते है । कथावस्तु के अंत में सुधा का गर्भपात होता है।

जिससे अस्पताल में वह पापा, बिनती और चन्दर को बिलखता छोडकर मर जाती है । यहाँ "गुनाहों का देवता" की दु:खात प्रेमकथा समाप्त होती है ।

इस मुख्य कथा के साथ तीन प्रासंगिक कथाएँ भी है । पहली कथा पम्मी की है । दूसरी कथा सुधा की सहेली गेसु की है, और तिसरी कथा बिनती की है । इन सबसे अलग कथा है– बर्टी के निष्फल प्रेम और पागलपन की ।

कथावस्तु की मुख्य विशेषता है– शृंखला बध्दता । कथानक प्रारंभ से अंततक विकास की ओर अग्रेसर होता है । कथानक को अवरुध्द करनेवाला एक ही प्रसंग उपन्यास में नही है । कथानक में कुतुहलता और प्रवाहमयता के गुण दिखायी देते है । जिसके कारण पाठक उपन्यास को अंततक पढता रहता है। कथा का केन्द्र–बिन्दु सुधा है । सुधा के विवाह के पुर्व प्रसंग सुखद है, परन्तु विवाह के बाद सारी कथा दु:खमय बन जाती है । इसप्रकार कथानक रोचक, रमणीय एवं प्रवाहमय है । अत: भारतीजी को कथावस्तु में सफलता मिली है ।

"सूरज का सातवाँ घोड़ा" में छ: कहानियों में एक कहानी प्रस्तुत की गयी है । यह प्रेम कहानियाँ अलग अलग न होकर एक माला में गुँथी हुई है । इसमें माणिक मुल्लाने सात दोपहर में कहीं गयी छह प्रेम कहानियों का संकलन है ।

प्रथम दोपहर में "नमक की अदायगी" की कहानी बतायी है । इसका नायक माणिक मुल्ला है । इसमें माणिक और जमुना के प्रणय प्रसंग है । दूसरी कहानी पहले कहानी को आगे बढ़ाती है । पहली कहानी जमुना की जीवन यात्रा का पुर्वाध्द है, तो दुसरी कहानी उसका उत्तरार्ध्द । दुसरी कहानी में जमुना का विवाह एक बुढ़े पति सें होता है । वह अपने पति से असंतुष्ट होकर वह रामधन टाँगेवाले के साथ गुप्त सम्बन्ध रखती है । इससे उसे पुत्र–प्राप्ति होती है । इस कहानी के उत्तरार्ध्द में जमुना के पति की मृत्यु होती है । अत: जमुना विधवा बन जाती है । अंत में रामधन जमुना के घर में आधारस्तंभ बनकर रहता है । तिसरी कहानी तन्ना के करुणाजनक मृत्यु की है । चौथी कहानी "मालवा की युवरानी देवसेना" की है । इसमें माणिक और लिली के रोमांटिक प्रेम का वर्णन है । कहानी के शेष भाग में उसका तन्ना के साथ

विवाह का वर्णन है । पाँचवी कहानी का शीर्षक है-- "काले बेंट का चाकु । इसमें सत्ती का माणिक के साथ प्रेम सम्बन्ध है । उनका यह प्रेम चमन ठाकुर को पसन्द नही है । इस कहानी का प्रसार "छठी" दोपहर में होता है । इसमें सत्ती चमन ठाकुर और महेसर दलाल की काम-लोलुपता के भय से माणिक के पास आती है । माणिक उसे महेसर और चमन ठाकुर के हवालें करता है । दोनों सत्ती को मार-पीट करते हैं, जिससे सत्ती बेहोश पड जाती है । दुसरे दिन सत्ती के मृत्यु की अफवाह फैलती है । इससे माणिक दु:खी होती है, आत्मघातकी बन जाता है । एक दिन चाय घर से आते समय वह सत्ती और चमन ठाकुर को भीखारी के रुप में देखता है । अत: माणिक के जीवन में उत्साह की लहर दौडती है । अंत में माणिक तन्ना के खाली जगह पर आर.एम.एस. में नौकरी करता है ।

"सातवाँ दोपहर" में माणिक ने "सूरज का सातवाँ घोडा" का तात्पर्य बताया है । यह घोडा जीवन में भविष्य के सपने और वर्तमान के नवीन आकलन भेजता है ।

माणिक कथावस्तु का केन्द्र बिन्दु है । प्रत्येक कहानी में उसका अटूट सम्बन्ध है । इस उपन्यास की प्रत्येक कहानी एक दुसरे से पूरक है । उपन्यास के कथानक में "हास्य और रुदन" का मिश्रण है । प्रत्येक कहानी का प्रारंभ पाठकों कों आनंदित करता है, तो उसका निष्कर्ष उन्हें रुलाता है । अत: कथानक में कौतुहलता, चमत्कारीकता, मौलिकता दिखायी देती है ।

उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्र के रुप में विभाजित हैं । पात्रों के चरित्र-चित्रण के साथ उनका निष्फल प्रेम, मानसिक द्वन्द्व और आन्तरिक व्यथाओं को प्रकट किया है । यह चरित्र-चित्रण पात्रों के स्वभाव गुण-विशेष के अनुसार पाया जाता है ।

भारतीजी के उपन्यासो में संवाद भी महत्वपुर्ण है । लेखक ने संवाद के द्वारा कथानक विकास के साथ-साथ पात्रों के अर्न्त मनोवृत्तियों का उद्घाटन बडी सफलता से किया है । ये संवाद वातावरण निर्मिती में सहायक बन गये है । इन के लम्बे संवाद भी न उपन्यास में उब पैदा करते है, न कथा व्यवधान में रुकावट बनते है । दोनों ही उपन्यास में संवाद स्वाभाविक रुप से आए है । इन संवादो में सभी गुण मौजुद है ।

अतः उपन्यास के संवाद संक्षिप्त, रोचक, सजीव बन गये है ।

"गुनाहों का देवता" और "सूरज का सातवाँ घोडा" दोनों उपन्यासों की भाषा में अंतर पाया जाता है । "गुनाहों का देवता" उपन्यास की भाषा रोचक है । इसकी भाषा में समाहार शक्ति, लयबध्दता, भावभंगिमा सहजता से झलकती है, जिससे लेखक की प्रतिभा का परिचय मिलता है । "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है । इसमें विविध संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी तथा ग्रामीण शब्दों का मिश्रण है । सरलता, स्पष्टता, यथार्थता आदि गुणों से भारती की भाषा समृदध बन चुकी है जिससे भारती का भाषा पर असाधारण अधिकार दर्शित होता है ।

भारतीजी के उपन्यासों में आए हुए पाँच स्वप्नों का मनो-वैज्ञानिक अध्ययन करना भी आवश्यक है । ये स्वप्न फ्रायड, एडलर, युंग की मान्यताओं का प्रतिपादन करते है । इन स्वप्नों ने व्यक्ति के अन्वृत्तियों को खोलने का सहज प्रयास किया है । साथ ही उपन्यास के कथ्य और शिल्प पर अपना प्रभाव छोड दिया है ।

संक्षेप में हम कह सकते है कि- "भारती के उपन्यास मौलिक और अद्वितीय है "ये उपन्यास लिखकर आज 40-45 वर्ष हो गए है, इन वर्षो "गुनाहों का देवता" के पच्चीस और "सूरज का सातवाँ घोडा" के "सात" संस्करण प्रकाशित हुए है । आज भी इन उपन्यासों की माँग वैसी ही है, जैसे की इस के प्रकाशन से प्रारम्भिक वर्षो में थी । इन दो उपन्यासों पर चल-चित्र की निर्मिती हुई है । अतः स्पष्ट है कि- "उपन्यास लिखने की कला में भारतीजी सिध्द हस्त है ।"

मुझे दुःख इस बात का हो रहा है कि- आज भारतीजी बिमारीयों से ग्रस्त है, जिससे उनकी लेखनी मौन हो गयी है ।

*** अनुसंधान की उपलब्धियाँ ***

हर अनुसंधान की कोई न कोई उपलब्धि होती ही है अन्यतः उस शोध कार्य का कोई मुल्य ही नही है । मैं भारतीजी के उपन्यासों के सूक्ष्म अध्ययन के बलपर निम्नलिखित मौलिक उपलब्धियों तक पहुँच पाया हूँ –

1. भारतीजी का जीवन संघर्षमय रहा है, जिससे संघर्षरत जीवन का सामना करने की प्रेरणा पाठक को मिलती है ।
2. भारतीजी के उपन्यास मौलिक है । उनमें लेखक का जीवन घुल मिल गया है लगता है, उनके उपन्यास उनके ही जीवन के कथानक है ।
3. उनके उपन्यास पढनेवाला संवेदनाशील पाठक प्रेम की समस्याओं से अभिभुत होकर सावधान होता है ।
4. मनुष्य के जीवन में निष्फल प्रेम से उदासिनता फैल जाती है, जिससे जीवन दुःखमय होता है । अतः लेखकने निराशमय जीवन को ठूकराया है, और हमें वर्तमान, भूत के जीवन को भुलकर भविष्य के "मंगलमय जीवन" के प्रति आस्था का संदेश किया है ।

धर्मवीर भारती का साहित्य मौलिक साहित्य है । साहित्य की हर विधा पर उन्होंने लेखनी चलायी है और उनकी हर विधा पर शोधकार्य किया जा सकता है । मैने उनकी उपन्यास विधा का एक अंग चुना है, तथापि अन्य शोध छात्रों के लिए भी कुछ नयी दिशाएँ बच पाती है । जैसे .....

1. धर्मवीर भारती के "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास का मूल्यांकन ।
2. धर्मवीर भारती के उपन्यासो में "प्रेम–चित्रण ।
3. धर्मवीर भारती के उपन्यासों का तात्विक विवेचन ।
4. धर्मवीर भारती के उपन्यासों में अंकित जीवन चेतनाएँ ।

अनुसंधान की उपलब्धि एवं नयी दिशाएँ –

* अनुसंधान की उपलब्धियाँ *

हर अनुसंधान की केाई न कोई उपलब्धि होती ही है अन्यतः उस शोध कार्य का कोई मुल्य ही नही है । मैं भारतीजी के उपन्यासों के सूक्ष्म अध्ययन के बलपर निम्नलिखित मौलिक उपलब्धियों तक पहुँच पाया हूँ –

1. भारतीजी का जीवन संघर्षमय रहा है, जिससे संघर्षरत जीवन का सामना करने की प्रेरणा पाठक को मिलती है ।
2. भारतीजी के उपन्यास मौलिक है । उनमें लेखक का जीवन घुल मिल गया है लगता है, उनके उपन्यास ही जीवन के कथानक है ।
3. उनके उपन्यास पढ़नेवाला संवेदलशील पाठक प्रेम की समस्याओं से अभिभुत होकर सावधान होता है ।
4. मनुष्य के जीवन में निष्फल प्रेम से उदासिनता फैल जाती है, जिससे जीवन दुःखमय होता है । अतः लेखकने निराशमय जीवन को ठुकराया है, और हमें वर्तमान, भूत के जीवन को भुलकर भविष्य के "मंगलमय जीवन" के प्रति आस्था का संदेश दिया है ।

धर्मवीर भारती का साहित्य मौलिक साहित्य है । साहित्य की हर विधा पर उन्होंने लेखनी चलायी है और उनकी हर विधा पर शोधकार्य किया जा सकता है । मैंने उनकी उपन्यास विधा का एक अंग चुना है, तथापि अन्य शोध छात्रों के लिए भी कुछ नयी दिशाएँ बच पाती है । जैसे ......

1. धर्मवीर भारती के "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास का मूल्यांकन ।
2. धर्मवीर भारती के उपन्यासो में "प्रेम–चित्रण ।
3. धर्मवीर भारती के उपन्यासों का तात्विक विवेचन ।
4. धर्मवीर भारती के उपन्यासों में अंकित जीवन चेतनाएँ ।